दूसरा अध्याय

इतिहास – संस्कृति - मिथक – एक विश्लेषण

आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी संस्कृति के पूजारी है| सांस्कृतिक तत्वों को उजागर करने के लिए उन्होंने परंपरा के विश्वास-प्रमाणों को अपनाने में हिचकता नहीं| उनके आरे के सारे साहित्य इतिहास तथा सांस्कृतिक तत्वों से संपूर्ण है| अपने उद्देश्य की पूर्ती के लिए मिथकों का समावेश भी उन्होंने अपनी रचनाओं में की है| इस लिए ही उनकी रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन के लिए इतिहास, संस्कृति एवं मिथक का विश्लेषण अनिवार्य है|

इतिहास, अतीत की कथा है| अतीत के बिना वर्तमान अधूरा है| इसलिए , इतिहास को वर्त्तमान साहित्य में प्रमुख स्थान है| संस्कृति, मानव के अन्दर की चीज़ है| 'संस्कृति' के बिना मनुष्य का अस्तित्व ही नहीं है| भारतीय साहित्य ने संस्कृति को ही साहित्य रचना का पहला तत्व माना है| मिथक का संबंध कल्पित कथाओं से है| साहित्य रचनाओं में अपने उद्देश्य पूर्ति के लिए मिथकों को अपनाने का कार्य साहित्यकार करते हैं| ये तीनों तत्व सफल रचना के लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है|

इतिहास – अर्थ एवं परिभाषा

भारतीय परंपरा के अनुसार इतिहास का अर्थ है 'यह निश्चय था'| डॉ. प्रभाकर माचवे इसका अर्थ करते है 'यह ऐसा हुआ'| इतिहास के लिए प्राचीन ग्रीस के लोग 'हिस्तरी' शब्द का प्रयोग करते थे जिसका अर्थ है 'बुनना'| इतिहास एक बुनने की प्रक्रिया है|

डॉ. रामशंकर शुक्ल रसाल सम्पादित 'भाषा शब्द कोश' के अनुसार इतिहास शब्द का अर्थ है 'पूर्व वृत्तान्त'| बीती हुई प्रसिद्ध घटनाएँ और उनसे संबंध रखनेवाले पुरुषों, स्थानों आदि का कालक्रम से वर्णन, तारीख, पुरावृत्त, आख्यान, प्राचीन कथा तथा अतीतकाल की घटनाओं का वर्णन|

इतिहास शब्द का प्रयोग मुख्यतः दो अर्थो में होता है प्राचीन अथवा विगतकाल की घटनाएँ तथा दूसरा है उन घटनाओं के विषय में धारणा| इतिहास में अतीतकाल के वृत्तांत को प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित करने का तत्व निहित है| प्राचीन संस्कृत साहित्य में इतिहास का प्रयोग बहुत व्यापक अर्थ में हुआ है| महाभारत पुराण परंपरा में वह मंगल भावना से जुड़ा हुआ है| 'महाभारत' के अनुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के उपदेश से समन्वित पूर्ववृत्त और कथा इतिहास है| 'विष्णुपुराण' में इतिहास उसे कहा गया है, जिसमें आर्ष कथाओं की व्याख्या हो, जो देव और ऋषियों के चरित्र पर आधारित कथा भविष्य एवं भूत के धर्म से युक्त हो| पुराण परंपरा के अतिरिक्त अन्य प्राचीन ग्रंथो में भी इतिहास की चर्चा हुई है| वहाँ वैदिक मंत्रों, ब्राह्मण ग्रंथों एवं उपनिषदों में उल्लिखित कथाओ के लिए इतिहास शब्द का प्रयोग किया गया है|[1] इतिहास का विशिष्ट अर्थ है तत्कालीन जीवन की काठ अर्थात् अतीतकालीन व्यक्तियों के चरित्र, उनसे सम्बंधित घटनाओं तथा वातावरण का तिथि क्रम आलेखन|

इतिहास किसी एक अनुशासन से नियंत्रित नहीं होता, उसे समग्र दृष्टि की ज़रूरत होती है| यह अतीत के अवलोकन का साधन है, घटनाओं की खोज-मात्र है, जिसमें यथार्थता तो होती है, किंतु साहित्यकार की जैसी मर्मस्पर्शी अनुभूति नहीं|

इतिहास, मानव के चरित्र की साक्षी है| आदिमानव से आधुनिक मानव तक वह साक्षी के रूप में चलता आ रहा है| मानव की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, साँस्कृतिक स्थितियों का इतिहास परिचायक होता है, उसमें सत्य घटनाएँ तो होती है, परंतु इतिहासकार कभी-कभी उसे काल्पनिकता का आधार भी देता है| अतः इतिहास को काल तत्व का अविष्कार माना गया है| इतिहास, जीवन्त मनुष्य के

[1] वैदिक कोश, पृ : 47

विकास की जीवन गाथा होता है जो अपने काल प्रवाह से नित्य उद्घाटित होते रहनेवाली नव-नव घटनाओं और परिस्थितियों के भीतर से मनुष्य की विजय यात्रा का चित्र उपस्थित करता है और जो काल के पर्दे पर होने वाले नए-नए दृश्यों को हमारे सामने सहजभाव से उद्घाटित करते हैं|[2]

इतिहास की भूमिका नीर-क्षीर विवेकी होती है| स्थान और काल इतिहास की दो आँखे होती है क्योंकि उन्ही के अनुसार अनेक घटनाओं की जानकारी मिलती है| किसी कालखंड के इतिहास से उस काल के मानव जीवन के सभी अंगो का परिचय प्राप्त होता है| मनुष्य की जीवन पद्धति में प्रयत्नपूर्वक परिवर्तन होते रहते है| यह केवल मनुष्य के बारे में ही दृष्टिगोचर होता है| अधिकाधिक सुख समृद्धि के लिए मानव प्रयत्न करता रहता है| इसमें जय और पराजय दोनों ही रहते है| इन सभी सफल-असफल घटनाओं की कथा और चिकित्सा इतिहास में होती है|

देश के उत्थान के लिए कतिपय महान विभूतियों द्वारा दिया हुआ समाज के लिए अपना योगदान इतिहास में विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है, ऐसे व्यक्तियों की सुसंगत जीवन झाँकी इतिहास होता है| प्राचीन काल से आधुनिक काल तक उपलब्ध संदर्भो के अनुसार उस समय के काल के मानवी प्रयत्न सामाजिक जीवन की घटनाएँ और परिस्थितियाँ इसके बारे में स्थल, काल और व्यक्ति इनका निर्देशों के साथ जो लेखन किया जाता है उसे इतिहास लेखन कहते है| इतिहासकार इसमें अपना योगदान देते हैं और यह ऐतिहासिकता साहित्य का आधार बनकर समाजोन्मुख होती है| उपन्यासकार इतिहास का संदर्भ लेकर ऐतिहासिक उपन्यास लिखते हैं|

[2] हिन्दी साहित्य का आदिकाल, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, पृ : 68

इतिहास की परिभाषा

हज़ारी प्रसाद द्विवेदी इतिहास के बारे में स्पष्ट मत व्यक्त करते है कि 'इतिहास मनुष्य की तीसरी आँख है| ईश्वर ने मनुष्य को पीछे की ओर देख सकनेवाला नेत्र दिया है और वह है उसका इतिहासबोध| इतिहास प्रेम की बात नहीं जानता, मगर इतिहासबांध को पलायन समझना आधुनिक नहीं, आधुनिकता विरोध है| आधुनिकता की तीन शर्ते हैं, एक इतिहासबोध, दूसरी इसलोक में ही कल्याण और तीसरी व्यक्तिगत कल्याण की जगह सामूहिक कल्याण की कामना| जो इतिहास को स्वीकार नहीं करें वह आधुनिक नहीं और चेतना को न माने वह इतिहास नहीं|[3]

एच.एस.लुकास इतिहास की विस्तारपूर्वक परिभाषा देते हुए कहते हैं - History is a systematic and chronological record of man's life and chievements from the dim past to the present. According to 'Oxford Dictionary' "History is a continous methodical record of public events, study of growth of nations, whole train of events connected with nations, persons, things."

फादर ऑफ़ हिस्ट्री माने जान वाले ग्रीक इतिहासकार हेरोडोटस के अनुसार "History is the 'study or investigation' of past time. This is still the meaning. It comprises the study of culture, the civilization of all ages. The student of history is first of all a Finder of Facts, discovering his data in all sorts of materials which we call sources."

History – A relation of incidents (in early use, either true or imaginary, later only to these professedly true) as narrative tall story. A written narrative constituting a continous methodical record, in order of time of important or public events, especially those connected with a particular country, people, individual etc.[4]

[3] आलोचना – जुलाई – सितंबर 1967, संपादक नामवर सिंह, पृ : 45-46

[4] The Oxford English Dictionary, Volume V, Oxford University Press, p : 235

जयशंकर प्रसाद के अनुसार इतिहास, वर्तमान की अवगति, पुनरीक्षण और पुननिर्माण का साधन है|[5]

डॉ. मिश्र :- इतिहास, "अतीत के अवलोकन का साधन है, घटनाओं की खोजमात्र है, जिसमें यथार्थता तो होती है, किंतु साहित्यकार की जैसी मर्मस्पर्शी अनुभूति नहीं|"[6]

इतिहास लिखित रूप में कही जा सकनेवाली लगातार सुचारू रूप से लिखी हुई टिप्पणी है, जो कालक्रमानुसार लिखी हुई है, जिसमें सार्वजनिक घटनाओं का समावेश है| विशेषतः जो किसी देश, लोग या किसी व्यक्ति से सम्बंधित है| इतिहास, मानव के विकास की, उसकी जीवन्तता की, उसकी जिजीविषा की कहानी है| इतिहास ही संस्कृति व सभ्यता का निर्माता होता है| हजारों साल की संस्कृति को हम भूल नहीं सकते, यह बात इतिहास ही बताता है|

इतिहास के तत्व

आलोचकों के अनुसार इतिहास के दस तत्व हैं| वे इस प्रकार है -

(1)**घटना देश तथा क्षेत्र से संबंध** :- घटना के सिवा इतिहास हो ही नहीं सकता| इस लिए घटना अपने आप में इतिहास बनकर ही हमारे सम्मुख आती है| घटनाएँ अनेक प्रकार की होती है| उसमें मानवता पर प्रकाश डालने वाली घटनाएँ इतिहास की साक्षी बन जाती है| घटना चिरंजीव तब बन जाती है कि जब लेखक अपने सजग एवं सशक्त विचारों के साथ उसे बँधकर रखता है| हर एक घटना का होना इतिहास के लिए अपना अलग कदम माना जाता है| घटना जितनी सक्षम होती है, इतिहास उतना ही सशक्त होता है| भारतीय इतिहास में आदिकाल से ही घटनाओं का अपना

[5] परंपरा और परिवर्तन, नंदकिशोर आचार्य, पृ : 12

[6] जयशंकर प्रसाद के नाटकों में इतिहास और संस्कृति, डॉ. उमेश चन्द्र मिश्रा, पृ : 33

अलग महत्व है| रामायण, महाभारत की घटनाएँ आज भी अपना आदर्श स्थापित करती है|

हर एक घटना उस देश से सम्बंधित होती है| देश की सामाजिक, राजकीय, धार्मिक स्थिति उस घटना पर अधिकार जमाती हैं, उससे सम्बंधित होती है| देश के विशिष्ट क्षेत्र का भी इसमें भाव है| क्षेत्र कौन-सा है, इस पर घटना का जय पराजय होता है| देश तथा क्षेत्र से सम्बंधित घटनाएँ ही उसकी विशेषताये, कमज़ोरियाँ आदि का बखान कर सकती है| इसलिए घटना में देश और क्षेत्र का संबंध विशेष महत्वपूर्ण होता है|

(2) **कथा की वास्तविकता से काल्पनिकता का समन्वय** :- जितनी वास्तविक हो, यथार्थ उसमें जितना ठूँस ठूँस भरा हो, उतना ही कथा का मूल्य बढ़ जाता है| यह कथा समाज सादृश्य होती है और समाज के पात्रों को सम्मुख करती है| कथा की वास्तविकता ही हर जीवन मूल्य को जन्म देती है| जीवन मूल्य मानवी जीवन के आदर्श होते हैं| इसलिए कथा का वास्तविक होना बहुत ज़रूरी है| इतिहासकार जब कथा में पात्रों के सहारे वास्तविकता प्रदर्शित करता है तब पाठक मंत्रमुग्ध होते है| इतिहासकार कथा की वास्तविकता से हमेशा प्रामाणिक होता है| कथा की वास्तविकता यह इतिहासकार की अपनी छवि होती है जिससे कथा में एक प्रकार की ताजगी आ जाती है और कथा अपने आप में मनोरंजक होती है|

वास्तविकता के साथ कल्पना का जोड़ हर इतिहासकार करता है क्योंकि कल्पना ही उसके स्वप्न है| इतिहासकार को जो बताना होता है उसका वह कल्पना के जोड़ के साथ वास्तविकता से समन्वय करता है| यह समन्वय ही कथा का प्राण होता है| इतिहास सामाजिक जीवनधारा का प्रवाह होता है, इस प्रवाह का सुन्दर बनाने के लिए, मनोरंजक बनाने के लिए काल्पनिकता का समन्वय बहुत ही आवश्यक है|

(3)**कथा का देशकाल और वातावरण** :- कथा की वास्तविकता उस देशकाल एवं वातावरण से सम्बंधित होती है| देशकाल-वातावरण संस्कृति-सादृश्य होता है| उस समय की आर्थिक, सामजिक, राजकीय धार्मिक परिस्थिति देशकाल की प्रतीक होती है| उस समय के समाज का वातावरण, उत्सव, वेश-भूषा, आचार-विचार, लोक जीवन, प्रथाएँ, रीति-रिवाज़ आदि सभी वातावरण से जुडी होती है|

इतिहासकार अपनी कथा में इस वातावरण का वर्णन करके उस समय की स्थिति पाठक के सम्मुख रखने का प्रयास करता है| उस समय के आदर्श भी वह पात्रों द्वारा उद्धृत करवाता है| देशकाल और वातावरण का सजीव चित्रण इतिहास अपनी रचना में करता है| अगर इतिहासकार ने कथा में देशकाल और वातावरण का वर्णन नहीं किया तो कथा पंगु बनेगी और देशकाल तथा वातावरण से कथा वंचित रह जाएगी और यह इतिहास के प्रति अन्याय होगा| इसलिए इतिहास का यह तत्व अपना अलग महत्व रखता है| कथा का देशकाल वातावरण उस समय के सामाजिक चित्र अंकित करता है, उस समय के यथार्थ और आदर्श को समाज के सम्मुख रखता है| इस प्रकार देशकाल और वातावरण से रचना सशक्त बन जाती है|

(4)**मुख्य कथा से उपकथाएँ** :- इतिहासकार जब अपनी रचना लिखता है तब उसमें एक मुख्य कथा का होना आवश्यक है| मुख्यकथा को लेकर सहजता से वह अपने भावों को साकार करता है| मुख्य कथा उसे अपनी रचना की समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान देती है| मुख्य कथा प्रमुख पात्रों द्वारा वह प्रकट करता है| मुख्य कथा में उसका मुख्य उद्देश्य कथा की घटना का यथार्थ होता है| ऐतिहासिक कथाएँ इतिहासकार अपने विचारों के द्वारा मोड़ देकर जब समाज के सम्मुख रखता है, तो उसे उपकथाओं का आधार ज़रूर लेना पड़ता है|

उपकथाएँ मुख्य कथा के ताने-बाने को ऐसा बुनती जाती है कि एक सजग चित्र कृति तैयार होती है| अपने अलग अलग अंगों के साथ उपकथाएँ मुख्य कथा का साथ देती रहती है| उपकथाएँ न हो तो रचना कठिन होती जाएगी और पाठक को उसमें रस लेना भी कठिन होता जायेगा| इसलिए मुख्य कथा के साथ उपकथाएँ होती है| इन उपकथाओं में इतिहासकार कभी-कभी कल्पना का प्रयोग करता है| कल्पना के जोड़ से वास्तविकता ऐसा रंग लाती है कि रचना मनोरंजक बनती जाती है| अतः मुख्य कथा एवं उससे सम्बंधित उपकथाओं का, इतिहास के तत्व में प्रमुख स्थान रहता है|

(5)**ऐतिहासिक पात्र एवं अन्य पात्र** :- ऐतिहासिक पात्र और उनका चरित्र चित्रण इतिहासकार न करते तो हमें उनका परिचय न होता| ऐतिहासिक पात्र, ऐतिहासिक घटनाओं के सूचक होते हैं| नायक एवं नायिका तथा प्रमुख पात्र उस समय के तथ्यों का परिचय अपने चरित्रों द्वारा देते हैं और इतिहासकार इसका उद्घाटन करता रहता है|

चारित्रिक विशेषताएँ इतिहासकार अपने पात्रों में भर देता है जिससे पात्र उस समय का चित्र अंकित करके समाज का आदर्श प्रस्तुत करें| चरित्र जितना ऊँचा होगा, उतने ही आदर्श होंगे| इसलिए ऐतिहासिक पात्र अनेक संघर्ष उठाकर कई जगह प्रस्तुत होते है| चरित्र के माध्यम से इतिहास के वे साक्षी होते है और अपनी अमरता प्रकट करते है| ऐतिहासिक पात्रों का अपना एक योगदान है जो अनेक आनेवाली पीढ़ियों को लाभदायी होता है| सत्यशील पात्र सत्यशीलता के प्रतीक है| इतिहासकार पात्रों में ऐसे मानवी मूल्य भरता है कि वह चरित्रवान बनकर सब की आँखों में विराजमान होता है| पात्र ही इतिहास के आधार स्तंभ है| बिना पात्रों के इतिहास अधूरा होगा| ऐतिहासिक पात्रों के साथ अन्य पात्रों का सहयोग

उपन्यासकार लेता है और पात्रों के चरित्र चित्रण द्वारा समाज के सम्मुख आदर्श स्थापित करता है|

(6)**अतीत पर आधारित वर्तमान एवं भविष्य** :- अतीत, वर्तमान एवं भविष्य की नींव है| अतीत पर ही वर्तमान एवं भविष्य का ढाँचा खड़ा होता है, इसलिए अतीत ही वर्तमान और भविष्य का सबसे प्रमुख पहलू है| अतीत की झाँकी हमें वर्तमान में मिलती है| अतीत की जो गलतियाँ है वह वर्तमान में सुधारना एवं भविष्य में उनका नामोनिशान न रखना एवं अतीत के आदर्शो को वर्तमान एवं भविष्य में पुनर्निर्मित करना, यह इतिहास की देन है|

भूतकाल, वर्तमान का मददगार होता है| जीवन के पथ का वह मार्गदर्शक ही नहीं मील का पत्थर समझें तो भी अतिश्योक्ति नहीं होगी| अतीत के अच्छे संस्कार आज के द्योतक है एवं कल के सपने है| अतीत के अच्छे रीति-रिवाज़ों पर आज का मानव जीवन खड़ा है, इसलिए वर्तमान और भविष्य को अतीत का आभारी होना चाहिए क्योंकि कोई भी मार्ग अतीत का स्पर्श करके ही आगे की राह चलता है और वह अतीत के गुणों-अवगुणों को परखकर ही अपना आदर्श बनाता है| इसलिए यह ऐतिहासिक तत्व बहुत ही आवश्यक है|

(7) **देशभक्ति** :- जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान है, इस सिद्धांत से ही हर व्यक्ति के हृदय में देशभक्ति का स्थान होता है| इतिहास इसका प्रणेता है कि उसने देशभक्ति को न केवल उभरा बल्कि देशभक्ति की ज्योति हर एक दिल में प्रज्वलित की है| इतिहासकार अपनी रचना में प्रमुख रूप से देशभक्ति का चित्रण करता हुआ आया है| इसमें सब मोह-पाश छोड़कर देश के लिए बलिदान क्यों न करना पड़े, 'देश सबसे श्रेष्ठ है' यह जागरण का भाव होता है| जाति का संकीर्ण अर्थ न लेकर राष्ट्रीय भावना

से एक सूत्र में सबको बँधकर, कुल एवं वंश का गौरव स्थापित करने से, हर एक के हृदय में प्रेरणा का भाव जगाना, इसका इतिहास में प्रकटीकरण होता है|

वीर वही होते है जो बलिदान के पथ पर चलते है| इतिहास, वीरों की पूजा ही करता आया है| वीर पूजा सबसे श्रेष्ठ भाव है| इतिहासकार वीर पूजा के साथ ही देश के प्रति सजग एवं सतर्क रहने के लिए मनुष्य की अंतः प्रेरणा को जागृत करके, उसे प्रेरित रखना ही अपना कर्तव्य समझता है| इन भावों के आधार पर ही इतिहास का गौरव होता है| इतिहास न हमेशा ऐसे ही भावों की प्रेरणा दी है| जाति एवं देश का गौरव, वीर पूजा, देशभक्ति आदि भाव देश के पुनरुत्थान के प्रतीक ही नहीं, प्रेरक समझे जाते हैं|

(8) **मानवता के अविच्छिन्न प्रवाह को प्रकाशित करने की साँस्कृतिक प्रेरणा**:- मानवता, भारतीय संस्कृति का प्राण तत्व है| मनुष्य का एक ही धर्म है और वह है 'मानवता'| इतिहास ने मानवता के अविच्छिन्न प्रवाह को देखने का हमेशा प्रयत्न किया है| इतिहासकार मानवता के विभिन्न अंगों को देकर अपनी रचना में कथा, उपकथा, पात्र, विविध प्रसंग आदि में साँस्कृतिक प्रेरणा का प्रचार करता है क्योंकि यही जीवन का अंतिम लक्ष्य है| साँस्कृतिक गौरव ही मानवता का उत्थान है|

इतिहासकार ने मानवता के प्रवाह को अपने शौर्य शक्ति से उभारने का प्रयास किया| नारी भावना का इसमें चित्रण हुआ है| मानवता में प्राण भरने का कार्य नारी ने सप्रमाण दिया है| नारी को देवमंदिर मानने की भावना इतिहास ने ही हमें दी है| मानवता पर आई हुई बाधाओं को इतिहासकार ने अपनी लेखन शैली से हमेशा साँस्कृतिक प्रेरणा दी|

(9)**मानव जीवन की पुनर्वाख्या का भाव** :- मानव जीवन को 'सत्य. व्, सुन्दरम' बनाने का भाव ही उसकी पुनर्वाख्या है| मानव जीवन की पुनर्वाख्या के भाव प्रकट

करना इतिहास का परम कर्तव्य है| हर एक काल में, हर समय में इतिहास ने मानवीय मूल्यों के आधार पर मानव जीवन को आदर्श साबित किया और उसकी पुनर्वाख्या में अपना योगदान दिया|

मानव जीवन की धारा को सुन्दर से सुन्दरतर और सुन्दरतम बनाने का कार्य इतिहास का ही है और सभी इतिहासकर इसके प्रेरक हैं| मानव जीवन के सभी तत्वों का चित्रण इतिहासकार जब करता, तब कई कसौटियाँ लगाकर वह मानवी जीवन की पुनर्वाख्या करता है| मानव जीवन में प्रकृति, संस्कृति, देश-प्रेम, समन्वय, विश्वबंधुत्व, एकता, समता, प्रेम-भावना आदि भावों को साकार कर इतिहासकार मानवी जीवन को सुन्दर बनाने का प्रयास करता रहता है| बदलते परिवेश, बदलती व्यवस्थाएं, बदलता समय, एवं बदलती आशाएँ इनके साथ मानवी जीवन को उजागर कर श्रेष्ठ मानवी जीवन की पुनर्वाख्या इतिहासकार का सबसे श्रेष्ठ लक्ष्य होता है|

(10)**लोक जीवन** :- इतिहास से हमें उस समय की लोक जीवन की दिशा एवं दशा का बोध होता है| लोक जीवन के अंतर्गत उनका रहन-सहन, शिष्टाचार, वेशभूषा आदि का परिचय प्राप्त होता है|

लोक जीवन की दिशा से इतिहास का मानव कितना प्रगतिशील एवं उसकी मानसिक धारणाएँ कितनी सामाजाभिमुख रही है, इसका ज्ञान होता है| लोक जीवन के नाते अतीत के जन-जीवन को स्पष्ट रूप में देख सकते हैं| लोक कथा, धर्म, रीति-रिवाज़, खान-पान आदि के सजीव वर्णन द्वारा इतिहासकार उसका चित्र प्रस्तुत करता रहता है| लोक जीवन से एक बहुत बड़ा संस्कार लोगों को प्राप्त होता है, वह है संस्कार| इतिहासकार इसे पकड़कर रचना करता है|

संस्कृति

संस्कृति शक्ति है| यह हमारे लिए जो कुछ सर्वाधिक महत्वपूर्ण है उसे उसकी समग्र निष्पत्ति में जानने की कोशिश है| संस्कृति, किसी व्यक्ति और समाज के कौशल को, जीवन के सभी क्षेत्रो में उसकी पूर्णता में और ऊँचाई पर पहुँचा देती है क्योंकि संस्कृति के द्वारा व्यक्ति अथवा समाज संपूर्णता की अंतर्दृष्टि प्राप्त कर लेता है| संस्कृति में मनुष्य की पूरी जीवनशैली शामिल है| यह एक परिष्करण की प्रक्रिया है|

भारतीय परंपरा के अनुसार संस्कृति के पाँच विभाग हैं – **धर्म, दर्शन, इतिहास, वर्ण और संस्कार**| इन्ही पाँच मूल उद्देश्यों पर संस्कृति का निर्माण और पूर्णतः विकास होता है| मनुष्य का ध्येय लौकिक और पारलौकिक सुख और शांति का मार्ग ढूँढ निकालना है और यह संस्कृति के आधार पर ही निश्चय किया जा सकता है| विकास के उच्च शिखर पर पहुँचकर जीवनमुक्ति का प्रयास ही संस्कृति का लक्ष्य हो जाता है|

संस्कृति का एक रूप प्रकृति भी है| प्रकृति के साथ मनुष्य का जीवन एक सुन्दर रूप साकार करता है| वह प्रकृति को अपने जीवनानुकूल मोड़ देता है और जीवन का आनंद लेता है| प्रकृति को परिवर्तित करने को ही संस्कृति कहा जाता है|

संकृति शब्द का अर्थ

ज्ञान कोष के अनुसार 'संस्कृति' का अर्थ है शुद्धि, सुधार, परिष्कार, निर्माण आदि| संक्षिप्त शब्द सागर के अनुसार शुद्ध, सफाई, संस्कार, सुधार, सजावट आदि इसका अर्थ है| हिन्दी शब्द सागर के अनुसार रहन-सहन आदि की रूढी, भीतर-बाहर के संस्कार यही संस्कृति शब्द का अर्थ है|

व्युत्पत्ति एवं परिभाषा

'संस्कृति' शब्द 'सम' उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु से 'सुट' का आगम एवं 'क्तिन' प्रत्यय लगाकर बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है संशोधन करना, सुधारना, उत्तम बनाना, सुन्दर या पूर्ण बनाना अथवा परिष्कार करना, शिक्षित करना, पवित्र करना, शुद्ध करना, सुसज्जित करना, सुनिर्मित करना आदि|

डॉ. बलदेव मिश्र कहते हैं – "संस्कृति है मानव जीवन के विचार, उधार, आचार का संशुद्धीकरण अथवा परिमार्जन| वह है मानव जीवन की सजी सँवरी हुई अंत स्थिति, वह है मानव समाज की परिमार्जित मति, रुचि, और प्रवृत्तिपुंज का नाम|"[7]

श्री. करपात्रीजी ने लिखा है – "लौकिक, पारलौकिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, राजनीतिक अभ्युदय के उपयुक्त देहेन्द्रिय मन, शुद्धि, अहंकारादि की भूषणभूत सम्यक चेष्टाएँ एवं हलचलें ही संस्कृति हैं|"[8]

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल का कथन है कि "संस्कृति, मनुष्य के भूत, वर्तमान और भावी जीवन का सर्वांगपूर्ण प्रकार है, हमारे जीवन का ढ़ंग हमारी संस्कृति है|"[9]

अंग्रेजी साहित्य में 'संस्कृति' शब्द का पर्यायवाची शब्द 'culture' माना जाता है| समाज विज्ञान के विश्वकोश में मौलिनोस्की ने कल्चर की परिभाषा करते हुए लिखा है –"उसमें पैतृक निपुणतायें, श्रेष्ठताएँ, कलागत प्रक्रिया, विचार, आदतें और विशेषताएँ सम्मिलित रहती है| अतः संस्कृति का संबंध दर्शन और धर्म से

[7] भारतीय संस्कृति को गोस्वामी तुलसीदास का योगदान by बलदेव मिश्र chapter I, पृ : 9

[8] कल्याण हिन्दू संस्कृति, शरदेन्दु पृ : 35

[9] कला और संस्कृति by वासुदेव श,रण अग्रवाल, पृ : 1

लेकर, सामजिक संस्थाओं तथा रीति-रिवाज़ों तक मानव जीवन की समस्त महत्वपूर्ण विचार प्रणालियों से है|"[10]

एडवर्ड.बी.टाइलर के अनुसार "संस्कृति, समाज द्वारा संचित ज्ञान, विश्वास, काम, नैतिकता, रीति-रिवाज़ आदि का समन्वित रूप है|"[11]

रायमण्ड विलियम "संस्कृति शब्द की विकास यात्रा पर प्रकाश डालते हुए 19 वीं शताब्दी की संस्कृति संबंधी धारणा के अंतर्गत निम्न लिखित चार अर्थो क्को समाविष्ट करते है:-

1. मानवीय परिपूर्णता के घनिष्ट संदर्भ में मानव मन की सामान्य अवस्था प्रकृति,
2. समाज में बौद्धिक विकास की सामान्य अवस्था,
3. कलाओं का सामान्य समुच्चय,
4. भौतिक, बौद्धिक और आत्मिक जीवन की पद्धति|"[12]

संस्कृति संबंधी परिभाषाओं में आधुनिक पाश्चात्य आलोचक टी.एस. इलियट की धारणाएँ भी काफी महत्वपूर्ण है| उनका कहना है कि "संस्कृति विभिन्न क्रियाओं का योग मात्र नहीं है, बल्कि वह जीवन की एक पद्धति है, जो जीवन को जीने योग्य बनाती है|"[13]

रेडोलिफ़ ब्राउन, संस्कृति को एक पारम्परिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करते हुए कहते है कि "संस्कृति वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से किसी सामजिक वर्ग या

[10] encyclopidia of Social Science Vol.III, IV, पृ : 621

[11] The study of society by Peter Rose, पृ : 91

[12] Culture and Society by Raymond William, पृ : 14

[13] The definition of culture, T.S. Eliot, पृ : 29

श्रेणी में विचार, अनुभूति या क्रिया के सुसंस्कृत ढंग एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक और एक पीढ़ी से दुसरी पीढ़ी तक संक्रान्त किये जाते हैं|"[14]

भारतीय विचारकों में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, धर्म, दर्शन और संस्कृति के क्षेत्र में अपना विशेष महत्व रखते हैं| संस्कृति संबंधी उनकी धारणा तो यह है कि "संस्कृति वह वस्तु है जो स्वभाव, माधुर्य, मानसिक निरोगता एवं आत्मिक शक्ति को जन्म देती है|"[15]

मंगलदेव शास्त्री लिखते है – "किसी देश या समाज के विभिन्न व्यापारों में या सामाजिक संबंधो में मानवता की दृष्टि से प्रेरणा प्रदान करनेवाले ततद आदर्शो की सृष्टि को ही संस्कृति समझना चाहिए|"[16]

हिन्दी के प्रसिद्ध आधुनिक कवि एवं आलोचक श्री रामधारी सिंह दिनकर का कहना है कि "संस्कृति जिन्दगी का एक तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता है, जिसमें हम जन्म लेते है| इसलिए जिस समाज में हम पैदा हुए हैं अथवा जिस समाज में मिलकर हम जी रहे हैं, उसकी संस्कृति हमारी है, यद्यपि अपने जीवन में हम जो संस्कार जमा करते है, वह भी हमारी संस्कृति का अंग बन जाता है और मरने के बाद हम अन्य वस्तुओं के साथ अपनी संस्कृति की विरासत भी अपनी संतानों के लिए छोड़ जाता है| इसलिए "संस्कृति वह चीज़ मानी जाती है जो हमारे सारे जीवन को व्यापे हुए है तथा जिसकी रचना और विकास में अनेक सदियों के अनुभवों का हाथ है|"[17]

---

[14] The international encyclopedia of Social Science, पृ : 536

[15] स्वतंत्रता और संस्कृति by सर्वपल्ली राधाकृष्णन. पृ : 33

[16] भरतीय संस्कृति का विकास, मंगलदेव शास्त्री (1946), पृ : 4

[17] संस्कृति के चार अध्याय, रामधारी सिंह दिनकर, पृ : 46

दिनकर की पुस्तक की भूमिका में जवाहरलाल नेहरु लिखते है – "संस्कृति है क्या? एक बड़े लेखक का कहना है कि संसार भर में जो सर्वोत्तम बातें जानी या कही गई है, उनसे अपने आपको परिचित कराना संस्कृति है| संस्कृति, शारीरिक या मानसिक शक्तियों का प्रशिक्षण, दृढीकरण या विकास अथवा उससे उत्पन्न अवस्था है| यह मन, आचार अथवा रुचियों की परिष्कृति या शुद्धि है| यह सभ्यता का भीतर से प्रकाशित हो उठना है|"[18]

अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध प्रबंध लेखक बेकन ने कल्चर को 'मानसिक खेती' के अर्थ में प्रथम बार प्रयोग किया है|[19]

संस्कृति के महान विचारक एवं संस्कृति के आख्याता डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का, उसके के बारे में मत है कि "सभ्यता का आंतरिक प्रभाव संस्कृति है| सभ्यता समाज की बाह्य व्यवस्थाओ का नाम है और संस्कृति व्यक्ति के अन्तर के विकास का|"[20] भारतीय संस्कृति के बारे में वे लिखते हैं कि प्रत्येक मनुष्य जानता है कि मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाएँ ही संस्कृति है| मनुष्य अपने सर्वोत्तम को जितने अंश में प्रकाशित और अग्रसर कर सका है, उतने ही अंश में वह सार्थक और महान है वही भारतीय संस्कृति है|[21]

क्रोबर का कहना है कि "संस्कृति, मानव जाति के पास ही होती है और अन्य प्रजातियाँ इससे वंचित होती है| इस खूबी में बोलने की क्षमता, ज्ञान, विश्वास, रीति-रिवाज़, कलाएँ और प्रौद्योगिकियाँ है|"[22]

---

[18] संस्कृति के चार अध्याय, रामधारी सिंह दिनकर, पृ : 5

[19] सभ्यता और संस्कृति, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, पृ : 196

[20] विचार और वितर्क, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, पृ : 191

[21] सभ्यता और संस्कृति, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, पृ : 30

[22] Anthropology, पृ : 53

संस्कृति का, मनुष्य के जीवन से यथावकाश संबंध रहता ही है| जीवन का कोई भी क्षेत्र इससे छूटा नहीं, इसी बात को महादेवी वर्मा अपने विचारों से स्पष्ट करती है कि "संस्कृति शब्द से हमें जिसका बोध होता है, वह वस्तुतः ऐसी जीवन पद्धति है, जो एक विशेष प्राकृतिक परिवेश में मानव निर्मित परिवेश संभव कर देती है और फिर दोनों परिवेशो की संगति में निरंतर स्वयं आविष्कृत होती रहती है| यह जीवन पद्धति न केवल बाह्य,स्थूल और पार्थिक है और न मात्र आंतरिक, सूक्ष्म और अपार्थिव| वस्तुतः उसकी ऐसी दोहरी स्थिति है, जिसमे मनुष्य के सूक्ष्म विचार, कल्पना, भावना आदि का संस्कार, उसकी चेष्टा, आचरण आदि बाह्याकार की परिष्कृति उसके अंतर्जगत पर प्रभाव डालती है|"[23]

संस्कृति के माध्यम से ही हम समाज में प्रचलित आचार-विचार, विवेक, रहन-सहन, आमोद-प्रमोद तथा कला और साहित्य सम्बंधित विचारों का पता लगाते हैं| मानवगत क्षेत्र से सम्बंधित तथा संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के व्यवस्थित प्रगति का संस्कृति एक लक्ष्य है| समाज के प्रतिनिधित्व के नाते राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक निर्णय के बारे में लोगों की अभिरुचि का पता संस्कृति लगाती है| मानव के शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक शक्तियों का विकास संस्कृति करती है| समाज जीवन के व्यापक धर्मो का आधार संस्कृति ही है| मानव धर्म के गुण-अवगुण की परिणति संस्कृति है| संस्कृति मानव समाज के सौभाग्य की देन है|

संस्कृति, युगों से संचित संस्कारों का घनीभूत, परिनिष्ठित, परिमार्जित, अविकल स्वरूप एवं आदर्श, लोकोपयोगी, शाश्वत जीवन मूल्यों का प्रतिरूप है| साथ ही जीवन जीने की एक व्यवस्था और स्वस्थ, शुद्ध जीवन की दीर्घ परंपरा का बीज रूप है| हर संस्कृति प्रायः देशकाल, पात्र और परिवेश के संदर्भ में बनती,

[23] भारतीय संस्कृति के स्वर, महादेवी वर्मा, पृ : 47

बिगड़ती और बदलती रहती है| यही कारण है कि संपूर्ण विश्व में विभिन्न संस्कृतियाँ सहज भाव से फलती-फूलती रही है|

संस्कृति का संबंध मानव की अंतर्मुख चेतना से है| जिस कर्म व भाव से हमारे संस्कार सुन्दर बनें, जिसमें कृति का सौन्दर्य तथा दिव्यता अधिक स्पष्टता से प्रकट हो सके वही है संस्कृति| जो चेतना हमें ऊर्ध्वारोहित करती है, वही है संस्कृति की विशिष्टता| ऊर्ध्वारोहन को प्रेरित करनेवाली चेतना का स्तर हर व्यक्ति में भिन्न-भिन्न होता है| इसका मतलब तो यह है कि हर व्यक्ति की मानसिक संरचना भिन्न-भिन्न होती है| मानसिक संरचना में जो भी कलुष और पशुत्व है, उसे दूर करने के लिए किए गए हमारे प्रयास ही हमें संस्कारवान बनाते है और इन संस्कारों से ही हमारी साँस्कृतिक चेतना का निर्माण होता है|

संस्कृति, मानव विकास के इतिहास की तरह एक अत्यंत सफल प्रेरणाप्रद स्रोत है, जिसके माध्यम से मानव के इतिवृत्त का प्रबल सूत्र विज्ञापित होता है| राज्य, प्रशासन, उनकी व्यवस्था तथा सभ्यता में हर आनेवाले युग में परिवर्तन होते है, किंतु संस्कृति एक प्रवाह है, अजस्र स्रोत है, जो काल-क्रम में कुछ क्षण के लिए अदृश्य होने पर भी पूर्ण रूप से विलुप्त नहीं होती| मानव विकास को उद्घाटित करनेवाला तत्व संस्कृति है| आध्यात्मिक और अति भौतिक शक्तियों को सामाजिक जीवन के उपयुक्त बनाने की कला ही संस्कृति है|

संस्कृति एक भावना है, जिसे परंपरा से प्राप्त और अर्जित संस्कारों के आधार पर हम भावना करते है| इसके समुचित विकास के लिए नाना प्रकार के संस्कारों की आवश्यकता होती है| इन संस्कारों में शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, वस्तुगत और भावगत संस्कार होते है| श्री.रामनाथ सुमन ने माना है कि संस्कृति मानव समूह के उदात्त गुणों की सूचिका है, जो उसकी विशिष्टता बताती है|

संक्षेप में कहा जा सकता है कि संस्कृति हृदय और मस्तिष्क की मुक्तावस्था है जिसमें जन्म से मरण तक के विभिन्न क्षणों को निर्देशन देनेवाले उदात्त तत्व, तेजस्विता, प्रज्ञा, उच्चता के आदर्श विद्यमान है| वही संस्कृति स्थिरता पाती है जो अधिक जीवंत, लोकमंगलकारी, तथा व्यापक दृष्टिकोण रखती है| ऐसी संस्कृति प्रतिकूल परिस्थिति और तूफानी आक्रमणों में भी क्षीण और विचलित नहीं होती| संस्कृति, मानव जीवन की शक्ति, प्रगतिशील साधनाओं की अभिभूति, राष्ट्रीय आदर्शो की गौरवमयी मर्यादा और स्वतंत्रता की वास्तविक प्रतिष्ठा है|

संस्कृति के स्वरूप

मानव जीवन का स्वरूप जिस प्रकार विशाल एवं व्यापक रहा है उसी प्रकार संस्कृति का स्वरूप भी विशाल और व्यापक है| "संस्कृति के दो रूप है – देव संस्कृति, मानव संस्कृति (वैदिक संस्कृति, अवैदिक संस्कृति)|"[24]

जिस प्रकार संस्कृति का स्वरूप विकसित होता है, उसी प्रकार उसके स्वरूप का महत्व भी विकासमान होता है| संस्कृति एक चेतना है, एक दृष्टिकोण है तथा एक प्रक्रिया है जिसके तीन पक्ष है – आस्था, चिंतन तथा व्यवहार परिष्कार| भारतीय संस्कृति के स्वरूप में मानवी समाज की राजनीति, धर्म, दर्शन, साहित्य, संगति, कला, नृत्य, लोकवार्ता, यज्ञ, उत्सव आदि का समावेश होता है| इन सबकी व्यवस्था, चिंतन, रीति रिवाज़, और सृजन ही संस्कृति का स्वरूप अंकित करता है|

आंतरिक शुद्धि, भौद्धिक मनोविज्ञान, आध्यात्मिक तत्वों की सृष्टि और जीवन के श्रेष्ठ तत्वों की शोभा एवं शालीनता संस्कृति के स्वरूप का आकार प्रकार खड़ा करती है|

[24] संस्कृति के चार अध्याय, दिनकर, पृ : 12

डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार का कथन है कि "मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग कर विचार और कर्म के क्षेत्र में जो सृजन करता है उसीको संस्कृति कहते है – मनुष्य ने धर्म का जो विकास किया, साहित्य, संगीत और कला का जो सृजन किया, सामूहिक जीवन को हितकर और सुखी बनाने के लिए जिन प्रथाओं एवं संस्थाओं को विकसित किया उन सबका समावेश हम संस्कृति में करते है|"[25]

संस्कृति के स्वरूप का लक्ष्य मानव जीवन के राग-विराग, हृदय की प्रेरणा, चिंतन की प्रक्रिया, उसकी धार्मिक क्रियाएँ तथा मानसिक एवं बौद्धिक व्यापार का है जिसके द्वारा मनुष्य समाज का विकसिक रूप बने| संकृति, समाज के घटकों के माध्यम से उसके विकास की दिशा में गतिमान रहती है| व्यक्ति को अनंत अग्रिम करनेवाली वह एक सामाजिक परंपरा है| संस्कृति, मानवी समाज के आंतरिक एवं बाह्य चेतना को लेकर मानवी जीवन में सत्य, शिव और सुन्दर का रूप प्रकाशित करनेवाली तेजस्वी दीपिका है|

संस्कृति एवं धर्म, दोनों संस्कार श्रेष्ठ है| धर्म, मानव के सारे जीवन को पवित्र करता है, उसमें श्रुति-स्मृतियाँ और पुराण ग्रंथ आधार रहते हैं| धर्म की धारा लोककल्याण है| संस्कृति, परंपरा को लेकर चलती है, उसमें मानवता और विश्वबंधुत्व के स्वर से लोककल्याण गूँज उठता है और इस प्रकार संस्कृति अपने स्वरूप से श्रेष्ठ बनती है| संस्कृति के दो पक्ष है – बाह्य और आंतरिक| बाह्य पक्ष में भाषा, रहन-सहन और मंगल वस्तुओं का संबंध है, तो आन्तरिकता में मानव सत्य की संवेदनशीलता और जीवन के सुख शालीनता रहती है|

[25] भारतीय संस्कृति और उसके इतिहास, सत्यकेतु विद्यालंकार पृ : 20

सभ्यता और संस्कृति

हिन्दी में सभ्यता और संस्कृति शब्द नए है| अंग्रेज़ी के civilization और culture शब्द से इसका गहरा संबंध है| अस्तव्यस्तता, साशंकता और अरक्षणयीता का जहाँ अंत होता है, सभ्यता वहाँ से शुरू होती है| क्योंकि जब भय भाव दब जाता है और मनुष्य की कुतूहलवृत्ति और रचनात्मक प्रवृत्ति बन्धनहीन होती है, तभी मनुष्य पशु सुलभ प्राकृतिकता से ऊपर उठकर समझौते और सहानुभूति के जीवन की ओर अग्रसर होता है| "सभ्यता का आंतरिक प्रभाव संस्कृति है| सभ्यता, समाज की बाह्य व्यवस्थाओं का नाम है, संस्कृति व्यक्ति के अन्तर के विकास का| सभ्यता की दृष्टि वर्तमान की सुविधा- असुविधाओं पर रहती है, संस्कृति की भविष्य या अतीत के आदर्श पर| सभ्यता के निकट कानून मनुष्य से बड़ी चीज़ है, संस्कृति की दृष्टि में मनुष्य कानून से परे है| सभ्यता, बाह्य होने के कारण चंचल है, संस्कृति आंतरिक होने के कारण स्थायी|"[26]

सभ्यता, समाज को सुरक्षित रखकर, उसके व्यक्तियों को इस बात की सुविधा देती है कि वे अपना आंतरिक विकास करें| इस लिए देश की सभ्यता जितनी ही पूर्ण होगी, अर्थात् उसकी व्यवस्था जितनी सहज होगी, राजनीतिक संगठन जितना ही पूर्ण होगा, नैतिक परंपरा जितनी ही विशुद्ध होगी और ज्ञानानुशीलन की भावना जितनी प्रबल होगी, उस देश के वासी उसी परिमाण में सुसंस्कृत होंगे| इस लिए सभ्यता और संस्कृति में घनिष्ठ संबंध है|

संस्कृति और सभ्यता, जीवन सरिता के दो ऊँचे और सबल किनारे है, जो धारा को उत्क्रमित संकुचित होने से रोकते है| संस्कृति, मानव की आंतरिक चेतना है और सभ्यता बाह्य| विद्वानों ने सभ्यता को बौद्धिक और व्यावहरिक ज्ञान तथा

[26] सभ्यता और संस्कृति, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, पृ : 194

प्रकृति को नियंत्रित करनेवाले साधनों का समुच्चय माना है| इसमें सामाजिकता के विशिष्ट गुणों का होना आवश्यक है| सभ्यता, उचित आचारयुक्त मनोवृत्ति का प्रतिरूप है| इसके निर्माण में प्रकृति और उसके उपादान जितने सहायक है, मानव जिज्ञासा और संकल्प उससे कम नहीं| डॉ.सत्यकेतु विद्यालंकार की धारणा है कि प्रकृति से प्राप्त शक्ति और सौन्दर्य का उपयोग कर, मनुष्य ने जो अपरिमित उन्नति प्राप्त की, वही सभ्यता है|[27]

संस्कृति और सभ्यता के तुलनात्मक विश्लेषण से यह सत्य समझ में आता है कि सभ्यता ही संस्कृति का निर्माण करती है| संस्कृति का क्षेत्र-विस्तार, सभ्यता की अपेक्षा बहुत कम होता है क्योंकि संस्कृति किसी राष्ट्रीय समुदाय विशेष की अपनी चेतना होती है और सभ्यता उसका बाह्य स्वरूप| संस्कृति और सभ्यता एक दूसरे के पूरक और संवाहक है|

मिथक - अर्थ एवं परिभाषा

हिन्दी में प्रचलित 'मिथक' शब्द अंग्रेज़ी के 'मिथ' शब्द का पर्याय है| सामान्य व्यवहार की भाषा में 'मिथ' शब्द का अर्थ है नितान्त अविश्वसनीय तथा काल्पनिक कथा| यह भी माना जाता है कि ग्रीक भाषा का मूल शब्द 'माइथस' से यह शब्द निसृत हुआ है| इस शब्द का अर्थ है 'मुख से उच्चरित वाणी'| लेकिन कालान्तर में इस शब्द में अर्थ संकोच हुआ और विशिष्ट अर्थ में इसका संबंध 'देवताओं की कथा' से हो गया| विको ने सर्वप्रथम इस बात की स्थापना की कि मिथक सत्य से दूर नहीं है| विद्वानों के अनुसार मिथक आदिम मानव का विज्ञान है| नव विज्ञान के विकास के साथ इस शब्द का अर्थ है 'पुनरुत्थान'|

[27] भारतीय संस्कृति और उसके इतिहास, डा. सत्यकेतु विद्यालंकार, पृ : 44

सामान्य रूप में मिथक का अर्थ है ऐसी परंपरागत कथा, जिसका संबंध अतिप्राकृत घटनाओं तथा भावों से होता है| मिथक मूलतः आदिम मानव के सृष्टि मन की अभिव्यक्ति है, जिसमें चेतन की अपेक्षा अचेतन प्रक्रिया का प्राधान्य रहता है| मिथक की रचना इस समय हुई जब मानव और प्रकृति के बीच की विभाजक रेखायें स्पष्ट नहीं थी| वे परस्पर सहयोग एवं संघर्ष के सूत्रों से बंधे हुए थे और चेतन मानव का मन अज्ञात रूप से प्रकृति की घटनाओं को, अपने जीवन की घटनाओं तथा अनुभवों के माध्यम समझने का प्रयास करता है| समष्टि मन द्वारा प्रकृति के तत्वों और घटनाओं के मानवीकरण की यह अचेतन प्रक्रिया ही मिथक रचना का मूल है|

यदि व्यापक दृष्टि से देखें तो मिथक का अर्थ होता है गुमनाम ढंग से रची गई कहानियाँ, जिनमें सृष्टि के उत्भव तथा नियति का वर्णन किया गया है, वह विवरण जो कोई समाज अपने बच्चों को इस विषय में देता है कि यह विश्व क्यों बना? हम जो कुछ करते है, क्यों करते है? इसका अर्थ है प्रकृति तथा मनुष्य के बारे में हमारे शिक्षणीय बिंब| मिथक, आदिम मानव द्वारा जिज्ञासावृत्ति की परितृप्ति के लिए किया गया आविष्कार मात्र नहीं है, बल्कि मिथकों की जड़े मानव स्वभाव की अतल गहराईयों में विद्यमान है| मानव स्वभाव तथा मानव समाज का एक होने के कारण, मिथक, अर्थ के उस पूरे क्षेत्र की ओर संकेत करता है जिसके अंतर्गत धर्म, लोक साहित्य, मानव-विज्ञान, समाज-विज्ञान, मनोविज्ञान तथा ललित कलाएँ आदि सभी आ जाती है| अंतः सामान्य रूप में मिथक आदिम मानव द्वारा सृजित ये कथाएँ है जिसका संबंध देवताओं के कृत्यों, सृष्टि तथा मानव की उत्पत्ति आदि अनेक तत्वों से है|

विको के अनुसार "मिथक, एक तरह की काव्यात्मक भाषा है, एकमात्र भाषा, जिसके लिए आदिम मानव समर्थ था, एक वास्तविक भाषा है, जिसके अपने रूपात्मक सिद्धांत और तर्क है|"[28]

गोमे ने कहा कि किसी अज्ञात तत्व के प्रति अपनी जिज्ञासा को यदि हम ने विज्ञान की संज्ञा से विभूषित किया है तो हमारे प्राचीनों द्वारा की गई खोज भी विज्ञान है|[29]

मार्कशोर का मत है कि मिथक एक बृहत नियंत्रक बिंब है, जो सामान्य जीवन के तथ्यों को दार्शनिक अर्थ प्रदान करता है|[30]

मिथक की उत्पत्ति

मिथक की उत्पत्ति के संबंध में विद्वानों के बीच मतभेद है| एक वर्ग ऐसा है जो मिथकों के मूल की खोज में संसार को देखता है, दूसरा वर्ग मिथक को मानव के अंतरजगत की अनुभूतियों तथा भावनाओं का प्रक्षेपण मानता है| मिथक, मानव अनुभूति का विषय है, किंतु अनुभूति के लिए प्रात्यक्षीकरण आवश्यक होता है| अतः मिथक की उत्पत्ति के दो पक्ष है – प्रात्यक्षीकरण और अमूर्तिकरण| जब आदिम मानव बाह्य सत्यों का प्रात्यक्षीकरण करता है, तब उसके आधार पर ही अमूर्तिकरण भी करता है| अमूर्तिकरण की इस मानवीय वृत्ति ने विभिन्न मिथकों को जन्म दिया है| एक ओर बाह्य जगत है जो निरंतर मानवी इन्द्रियों के समक्ष अपने को उद्घाटित करता रहता है तो दूसरी ओर है मानव मस्तिष्क, जो इन प्रभावों को निश्चित आकार

[28] मिथक एक अनुशीलन, मालती सिंह, पृ : 12

[29] मिथक एक अनुशीलन, मालती सिंह, पृ : 13

[30] मिथकीय कल्पना और आधुनिक काव्य, जगदीश प्रसाद, पृ : 26

प्रदान करता है| अतः मिथकों की उत्पत्ति के लिए बाह्य जगत तथा आंतरिक जगत दोनों ही निर्माणात्मक उपादान का कार्य करता है|

मिथक निर्माण के बाह्य घटक

मिथक निर्माण के बाह्य घटकों में प्राकृतिक तत्व, अनुष्ठान, ऐतिहासिक घटनाएँ, नैतिक चेतना आदि महत्वपूर्ण है| प्रकृति के मुख्य अंग सूर्य, चन्द्र, तारे आदि के साथ साक्षात्कार क्षणों को मानव ने अपने ढंग से परिभाषित किया और यही परिभाषा बाद में मिथक का रूप धारण कर चुकी है| विभिन्न प्राकृतिक उपकरणों के अनुसार ही उससे संबंध भिन्न भिन्न मिथकों का जन्म हुआ है| लेविंस स्पेन्स ने अनुष्ठान को मिथक की उत्पत्ति का कारण माना है| उनके अनुसार अनुष्ठानों से उत्पन्न मिथक ही वास्तविक है क्योंकि वे देवताओं से सम्बंधित कथाएँ है| मिथक पर विचार करते हुए कुछ विद्वानों ने कहा है कि तत्कालीन मानव समाज में घटित सच्ची घटनाओं का उदात्तीकरण करके, ऐतिहासिक पुरुष को दैविक पुरुष बना देने की क्रिया मिथक की उत्पत्ति का कारण है| नैतिकता की चेतना ने भी विभिन्न मिथकों के निर्माण में सहायता दी है|

मिथक निर्माण के आंतरिक घटक

मिथक निर्माण के आंतरिक घटकों में जिज्ञासावृत्ति, कल्पनाशीलता, भय तथा आनंद और सादृश्य आते हैं| अज्ञानता के कारण आदिम मानव अनेकानेक प्रश्नों का अपने आप परिभाषा दी जाती थी और उनके द्वारा की गई व्याख्या कथाओं के रूप में प्रतिफलित होती है| आदिम मानव अपनी अज्ञानता की पूर्ति के लिए कल्पना का सहारा लेता था और इसी कल्पनाशीलता ने बाद में मिथक का रूप धारण किया है| भय तथा आनंद भी मिथक के निर्माण में सहायक सिद्ध होते है| मानव की यह मूल प्रकृति है कि वह भयोत्पादक या अनिष्टकारी तत्वों से बचना चाहता है तथा

आनंदमयी तत्वों को बार-बार प्राप्त करने की इच्छा एवं कामना करता है| आदिम मानव की ये कामनाएँ ही कल्पना के सन्निवेश के साथ अनेक प्रकार के मिथकों की उत्पत्ति का कारण बनती है| विद्वानों के अनुसार सादृश्य की अनुभूति तथा उसके आधार पर किए गए निर्णय भ्रांतिपूर्वक होते है, फिर भी आदिम मानव की इस भ्रांति ने अनेक मिथकों को जन्म दिया है| मिथक एक साँस्कृतिक शक्ति है|

इस प्रकार इतिहास, संस्कृति एवं मिथक तत्वों का विस्तारपूर्वक विश्लेषण करने से पता चलता है कि इतिहास मात्र अतीत की घटनाओं का चित्रण है, इसमें साहित्यकार की मर्मस्पर्शी अनुभूति बिलकुल नहीं है| संस्कृति, मानव की अपनी उपज है इसलिए ही इसमें 'मानवीयता' पाई जाती है| मिथक में कल्पित कथाएँ तथा विश्वासों का समावेश है, और साहित्यकार को अपने उद्देश्य की पूर्ति तक पहुँचाने की क्षमता मिथकों के प्रयोग के द्वारा संभव है| ये तीनों तत्व साहित्य को उच्च कोटि का बनाने में सहायक है| आगे के अध्यायों में हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यास, कहानी, निबंध आदि रचनाओं में इन तत्वों का समावेश कैसे हुआ है, इसका विस्तारपूर्वक विश्लेषण किया जाएगा|

.....ooo.....